COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 107-114
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कथापरम्परामे ग्राम्य जीवन

अम्बिका कुमारी
शोधार्थी
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग ,बी. एन. मण्डल **विश्वविद्यालय** , लालू नगर, मधेपुरा

डॉ. महेन्द्र नारायण राम जीक मैथिली कथा-संग्रह ‘गहबर’, कल्याण पथ दायिवी, खुटौना, मधुबनी द्वारा 2004मे आ ‘मनतोड़िया’ कथा संग्रह, नवारंभ, मधुबनी/पटना द्वारा 2019मे प्रकाशित अछि। एकदिस गहबरमे जतS कुल पन्द्रह कथा संग्रहित अछि तS दोसर दिस ‘मनतोड़ियामे’ कुल-सोलह। ‘गहबर’ कथाक क्रम अछि– संस्कार, आक्रोश, सरपंच, धपोचन, उपकार, कणारि, प्रेम, बुधि कतौ रहय, रेशमी, भलाइ, अनुभूति, समय बदल गेल, छोटकी, कारण आ गहबर तS ‘मनतोड़िया'क क्रम अछि– मनतोड़िया, जय-पराजय, जुड़बन, रंग, आखिर किएक, प्रायश्चित, मुँहपुरखी, ट्रांसफर, सरवरेश्वरी दर्शन, पछतावा, फर्जी, अपने गाम, आरकेस्ट्रा, क्षोम, यथास्थान आ असलियत। एक दिस पहिल कथा संग्रहक अंतिम कथाक शीर्षकसँ नामाकरण कयल गेल अछि तS दोसर कथा-संग्रहक नामाकरण पहिल कथा-शीर्षकसँ।

कनैक अलग-अलग किछु कथापर नजरि दौड़ाइब एहिठाम हमर अभीष्ठ अछि–

पहिल कथा अछि– ‘संस्कार'। एहिमे ई प्रेरणा देबाक प्रयत्न कयल गेल अछि जे कोनोहु व्यक्ति, जाति अथवा समाजक विकास ओकर संस्कारपर निर्भर करैत अछि। भविष्यकेँ उज्जवल बनेबाक नीक संस्कार बहुत आवश्यक अछि। एकर किछु अंश द्रष्टव्य–

“ताबतमे सड़कपर मंत्रीजीक नजरि पड़ि गेलैक। गढ़ियाक आठ-दस्टा मुसहर आबि रहल छल। ओकरा देखि मंत्री जी बजलाह–

‘हे देख! सौंसे गढ़ियाक मुसहर आबि रहल अछि।’

ताबेमे सब लगमे पहुँचि गेल छल। अर्द्धनग्न। डाँड़मे धोतीक ढट्ठा बन्हने। चाकर-चौरस सम्पूर्ण शरीरमे माटि लागल। सभक आँखिमे आशा-आकांक्षा ललचाइत जेना बुझना जाइत छल। जरुर किछु बिशेष बात कहबाक लेल सभगोते जुटिआक’ आयल छैका। अपनामे सभ गोटे काना-फूसी क’ रहल छल। तू कहीं त’ तू कही। मगर ककरो मुहँसँ बकार नहि फुटि रहल छलैक कि ताबतमे मंत्रीजीक आवाज आयल-

“आबै जाइ जा, कत’ आबै गेलहक?”

सभ गोटे सहटि क लगमे आबि गेल आ ओहिमेसँ एकटा जकर नाम अशर्फी सदाया छल, आगू बढ़ि कँ बाजल-

सरकार! बहुमेहनति भेल छल। बल्कि ऐना बुझू जे भोटक समय कतेक बात सुन’ पड़ल। लड़ाइ कर’ पड़ल। बड़का बड़का महाजन आबि क’ दोसर कँ भोट देबाक लेल कहैत छलाह। मुदा अपनेक भाषण

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

सरकल गाछीमे सुनने रही। अपने समाजक गरीबी, समता आ ऽपर चढ़ेबाक बात केने रही। ताहिसँ हम सभ टोलमे जा-जा क' बैसार केलहुँ आ निर्णय केलहुँ कि एहि बेर हिनके देखल जाए।

से त' बुझलहुँ, अहाँ सभ बड्डमेहनति केलहुँ। मुदा कहबाक की अछि से ने कहू?" मंत्री जी तोकलथिन। सभ मुसहर एक्के स्वरमे बाज' लागल सरकार! हमरा टोलमे किछु धीया-पूता संयोगसँ पढ़ि-लिखि लेलक। अशर्फीक बेटा एहि बेर मैटीक सेहो केलक अछि। आरो तीन-चारिटा बच्चा हाइ स्कूलमे पढ़ैत अछि। सरकार! अब जन-बोनिसँ पेट नहि भरैय महाजन सभ अब ओतेक बोनियो नहि दैत अछि। आब त' टोला भुखमरीमे आबि गेल अछि। बहु आशासँ आयल छी। अपने सरकार छी। ताहुमे भारत सरकार। अपने जे चाहवै, सम्हेतै। हमरा धीया-पूता कँ कतौ नौकरी धरा दियौक।

मंत्रीजीक भौंह तनि गेलनि। कनेक तुनकमिजाजी त' 'पहिनहुँसँ छलाहे। तामसे कुर्सीपर ठाढ़ होइत बजलाह-

"आयँ रौ अशर्फी। तू सभ कोना बात करैत छ! नौकरी कतौ गाछमे फड़ै छैक, जे झखा दियौ!"

मंत्रीजीक बात सुनि अशर्फी सहित सभ केओ अचंभित। किछु नै फुरै। बकर-बकर मंत्रीजीक मुँह ताकए लागल।[1]

दोसर कथा अदि- 'आक्रोश', ई कथा सामंतवादी व्यवस्था के जमि कऽ विरोध करैत अछि। सरपंचक प्रयाससँ सामाजिक वातावरणकँ सौहार्दपूर्ण बनाओल गेल अछि, जखनकि सरपंचकँ खलनायककँ रुपें प्रस्तुत कयल गेल अछि, मुदा ई सत्य अछि ई सरपंच द्वारा एक पैघ घटना घटऽसँ बचायल गेल। जँ हुनका द्वारा ई नहि कयल जयतैक तऽ संभव छल जे सामाजिक समरसता विषमतामे बदलनि जाइत। 'आक्रोश' नामक कथाक किछुपर नजरि देलासँ एकर वस्तुस्थितिक अंश किछु स्पष्ट होयब स्वाभाविक। एहिताम एहि कथाक किछु अंश द्रष्टव्य जे शुद्धतः ग्रामीण परिवेशक-द्योतक थिक-

"तुरंत लोक सभ अपन अपन घर गेल। पाइ आनलक आ सुरेशक हाथमे जमा केलक। पाइ तुरत्ते दस हजार जमा भेल।

"हाँ! त' बौआ काल्हि की सभ कर' पड़तैक?"

"मारिक बदला मारि, गारिक बदला गारि, आदरक बदला आदर, बेइज्जतक बदला बेइज्जती" आइसँ हमर सिद्धान्त भ' गेल। जे हमरा बौआ कहताह तिनका हम भैया कहबनि। जे कहत 'यौ' तिनका हमहूँ सभ यौ कहबनि आ जे कहत 'रौ' तिनका रौ कहबाक अछि। बिना भय कँ प्रीति नहि। जेहेन कँ तेहेन कर' पड़तैक। तखने हमर आक्रोश शांत होयत, अहाँ सभक आक्रोश शांत होयत। ओ जमाना बिसर' पड़तैक जे एक गालमे चाट मारलासँ दोसरा गाल देल जाइ छल। क्यो गारि पढ़ि रहल अछि आ हम सभकर-बकर मुँह तकैत रहैत छलहुँ। तैं हमर ई आग्रह जे काल्हि खन जतेक गोटे छी डेरहरथी ल' क' अपन-अपन काज करताह। जनानी सभ संगमे खुरपी-हँसुआ राखथि आ जत' भेटै अवधा तत' पहिने एक हजार गारि पढ़ल जाय। जहिना माइग्रे- बहिनिये हमरा सभ कँ गारि पढ़लक-तहिना पढ़ल जाय। जहिना करामे बान्हेबाक लेल ऊद्धत छल तहिना काल्हि रस्सा राखल जाय। पकड़ि कँ कोनो गाछमे,

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

ढंगमे, मेह आदिमे बान्हेल जाय। जाहिसँ पूरा टोलक-पंचायतक, प्रखंडक लोक बुझि लै जे आब गरीब-गुरबा, दलित पिछड़ा कँ बिना कसुर गारि मारि नहि देल जा सकैछ। ओकरो संवेदना छैक, इज्जत छैक, मानवता छैक। ओकरो देहमे खून छैक। ई खून आइ धरि गुलाम छल आब ओ नहि रहल। आइ स्वतंत्र भ' गेल अछि तैं हुनका सभ कँ संगे लक' चलल जा सकैत अछि। गरीब-गुरबाक, दलित पिछड़ाक भागीदारीक बिना कोनो काज अधूरा रहत। कोनो विकास असंभव होयत। कमाय लंगोटी बला आ खाय धोती बला, नहि चलत। ओकरो प्यार, स्नेह, सौहार्दता चाही।

"तें काल्हिखन अवधा कँ गारि पढ़ल जाय आ रस्सामे बान्हेल जाय। जौं बात बढ़त त' दस बीस लाठी मारल जाय। ओहुसँ बेसी बढ़त त' अबधा कँ जानसँ मारिक' कमला घाटमे फेंकि देल जाय। केश हेतैक त' लड़ल जेतैक। हाँ, अपन-अपन जनानी सभ कँ कहि देल जाय जे आब ओकर छौड़ा सभ जखन हमरा सभक माइ-बहिन कँ कुकठ बात करय-छेड़खानी करय त' हँसुआ खुरपीसँ हाथ-पैर काटि दइ। आब डरबाक जरूरत नहि छैक। हम फरिया लेबै सार अबधासँ। देखब कते माइड़ दूध पीयेने छैक? की सभ गोटे के मंजूर छह?"[2]

'घपोचन' कथामे ई बताओल गेल अछि जे श्रद्धा आ विश्वाससँ ओत-प्रोत मनुष्य ईश्वरत्व केर प्राप्ति करबामे सक्षम भऽ पबैत अछि। ईश्वरत्वर अर्थ एहिताम ई जे ओकर सफलता निश्चित रुपेण संभव। 'कनारि'मे जनिझाइत सभक ओछ मानसिकताकँ दर्शाओल गेल अछि। एकटा सुइया नहि देलापर पड़ोसीसँ बदलामे बच्चाक जिनगीसँ खेलब एक पैघ अज्ञानताक द्योतक थिक। समाजमे एहि तरहक कतोक घटना नित्य-प्रति घटैत रहैत अछि।

एहन घटना पिछड़ल ओ पछड़ल वृहत्तर समाजमे देखल जाइत अछि। एकर कारण अशिक्षा अछि। जहिआसँ शिक्षाक प्रति लोकक झुकाव भेल अछि, तहिआसँ एहिमे उत्तरोत्तर सुधार भऽ रहल अछि, मुदा एखनो बहुतो ठाम ई स्वभाव विद्यमान अछि डॉ. रामक कनारि कथाक ई अंश देखल जा सकैत अछि-

दीदी! की कहू! दवाइ त' छलै। कोठीपर रखने छलियैक। धोंछिया बिलाड़ि कत' से ने कत'सँ अयलैक आ लातसँ गिरा देलकैक। दवाइ के शीशीये फुटि गेलैक। की कहू दीदी! दवाइ रहितैक त' जरुर द' दितौ। नहि छैक। लाथ करितौ?

ललमनियाँवाली मूर्च्छित भ' गेलीह आ दौड़ल अपना आँगन दिस। जखन आँगन अयली त' देखल जे बच्चा आँगनमे पड़ल अछि। एकटा उज्झड़ नुआसँ झाँपल अछि। झौहड़ि भ' रहल छैक। मंगला अंगनाक एगो कोनमे चिचिया रहल अछि। दू गोटे पकड़ने छल। "हौ! बाप कोना कँ जीबै हो.....। केकरा देख कँ संतोष बान्हबै हौ.....! मंगला बोम फाड़ि क' कानि रहल छल। ललमनियावाली बच्चा कँ आँगनमे उज्झड़ कपड़ासँ ढाँकल देखि चीते तड़ाकसँ गिरल। मुँहसँ एकटा आवाज अयलै 'बौआ रौ!' आ बेहोश भ' गेलीह। पानि छींटि, नाक दाबि होशमे आनल गेल। होशमे अबिते बच्चा कँ भरि-भरि पाँज कँ कोरामे लेलक आ थोथरि-थोथरि मुँहमे चुम्मा लिअ' लागल।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

बहादुर घरक बीचमे चाउरक बोड़ामे दस-दस सुआसँ मुँह सीयैत छल आ ओकर घरनी बेलावाली चाउर फटकैत छलीह। बहादुर बेलाबाली कँ कहलखिन्ह- "यै! कनेक एक लोटा पानि दीअ'। पियास लागल अछि।"

बेलावाली पानि आनि देलखिन्ह। बहादुर पानि पीबि लोटा रखलक ताबे कानमे एकटा करुण आवाज सुनाइ पड़लनि।

बहादुर बोड़ा सिनाइ छोड़ि खिड़कीसँ बाहर झाँकल क त' देखैत अछि टोलक लोक सभमे से एक गोटे एकटा बच्चा के कन्हापर नेने श्मशान जा रहल अछि। एक गोटेक हाथमे एकटा कोदारि आ मंगलाक हाथमे कोहा-कौड़ी-आगि। राड़ी खढ़ सेहो। बहादुर बेलावाली से पूछलखिन्ह-केकरा की भेलैक अछि?

ललमनियावालीक बेटा मरि गेलैक अछि। की कहु आयल छलीह दौड़ल- दवाइ लेबाक लेल। जाहिसँ अपन बौआ ठीक भेल रहय ने, वैह दवाइ लेबाक लेल। हम नहि देलियनि।

कियाक नहि देलियनि। अहाँ कँ द' देबाक चाही ने। बच्चा ने बेमार छलै।

हैं! यौ, अहाँ बुड काबिल छी। अहाँ कँ बुझल नहि अछि। दिन दसम हम ओकरा ओहिठाम गेल रही। अहीक धोतीमे चिहक्का लागि गेल रहय। सीबाक छल। सूइया नहि रहय। माँग' लेल गेल रही। नहि देलक कहलक नाड़िये त्रुटि गेल छैक। हम अपन मुँह हपना सन ल' क' चैल आयो रहा। तैं हम दवाइ नहि देलियनि। दवाइ त हौए कोठियेपर राखल अछि। हम कहलियनि- नहि अछि। बिलाड़ि कोठीपरसँ शीशीये गिरा देलक आ ओ फुटि गेल!

बहादुर अपन कनियाँक बुद्धिपर अवाक रहि गेल आ सोचैत रहि गेल जे एहेनो जनानी छैक एहि संसारमे। एक बूंद दवाइ द' दैतैक त' ओकर बच्चा जीबि जैतैक। से नहि द' सुईयाक कनारि बच्चाक जान ल' क' पूरा केलक।

बहादुर बाजल- "जाउ! अहाँ कँ नरकोमे नहि बास होयत!"[3]

'प्रेम' कथाकार ग्रामीण परिवेशमे अशिक्षा आ अंध विश्वासक कारण होमऽबला घाताक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। दुनियाँ एहि वैश्वीकरणक युगमे कतऽसँ कतऽ चलि गेलैक अछि आ हमरा समाजमे एखनो लोक भूत-प्रेतमे विश्वास करितहिं अछि। एकर लाभ ओहि चालाक लोक सभके भेटि जाइत अछि जे एहन समयक तोहमे लागल रहैत अछि। ग्रामीण परिवेशक कथा थिक 'प्रेत' तऽ रेशमी' कथा अंधविश्वासपर चोट करैत अछि। आइयो पिछड़ल ओ पछड़ल समाजमे एहन लोकक भीड़ अछि जे गाछपरसँ खसलासँ सूइ-दवाइमे विश्वास नहि कऽ झाओ-भगतमे विश्वास करैत अछि।

'भलाइ' कथा केर माध्यमे ई कहबाक प्रयत्न कयल गेल अछि जे व्यक्ति अपना जीवनमे दोमराक भलाइ करैत छथि, समय एलापर कोनो-ने-कोनो रुपें ओकर मदति भेटितहि अछि। एक आध्यात्मिक ओ मानवताक कथा केर नाग अछि भलाइ।

'अनुभूति' कथामे कथानायक रतिया, जे वास्तवमे पिताजीक परम भक्त छल। हुनकर पत्नी सेहो आरंभमे हुनका प्रति सेवा-भाव रखैत छलीह, मुदा बुढ़ापाक-परेशानीकँ नहि झेल पाबैबाक स्थितिमे

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

ऊबि जाइत अछि आ अंतमे गलत निर्णय लऽ लैत अछि। अनुभूति भेलापर पूर्वक भाँति फेर हुनका सेवामे लागि जाइत अछि। मानवताक रक्षार्थ कथा- 'अनुभूति' लोक सभकँ नजरि खोलि देत अछि।

'समय बदलि गेल' कथामे सामंतवादी व्यवस्था केर विरोध भेल अछि। जेना-जेना लोक शिक्षित भेल जाइत छथि, ओना-ओना विचारधारामे परिवर्तन होयब स्वाभाविक अछि।

अंतिम कथा 'गहबरमे' राजा मलहेसक पूजाक सविस्तार वर्णन कयल गेल अछि। पूजाक क्रममे आयल परिस्थिति समाधान कोना कोना कयल जाइत अछि, सामाजिक एकता बनौने रहऽमे की की करऽ पड़ैत छैक, तकर नीक जकाँ चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि।

डॉ. रामक कथा गहबरक वास्तविक चित्रक।

ई नमूना द्रष्टव्य-

टोलक मुँहपुरुख सभ पंडालमे अपन-अपन काजमे थाह थहि क रहल छथि। मृदंगक आवाज गनगनाय रहल अछि। ताबतमे दरपी भगत धोती पहिर, एक हाथमे बेंत ल' एक हाथमे थारी ल' पंडालमे आवाहन क' रहलाह अछि दादा जी कँ। छोटका एकटा लोटामे तुलसीदलसँ जल झाड़ि रहल अछि दरपी भगतपर कि ताबेमे देखल भगतक देह डोल' लगलै। भाव खेल' लगलै आ जमीनपर झुकिक' 'किछु बाज' लगलै एना करैत देखि हल्ला केलक विरदाबोन वाला बजनियाँ। बाजा बंद भ' गेलै। भगैत दिससँ आवाज आयल- "जै गंगा, जै बीस, सत जबाब पड़े छह दाता दीनानाथ कँ। "भगैत ठिक' कुद' लगलाह। दू टा छौड़ा हुनका पकड़ि लाल लंगोटा पहिराओलक। माला पहिराओलक। बजनिया सभ भगैत गौनाइ शुरु केलक। कनेक कालमे तोरियाहीसँ आयल भगैत दाँत कीचैत भाव खेले' लागल, लाल लंगोटा, माला आदि पहिराओलक गेल। बेरा-बेरी सभ भगतियां खेल' लागल। सभ भगतिया कँ चटिआ अपन-अपन सेवामे लागल रहल। टहलि-टहलि भगत सभ कँ अक्षत-फूल देम' लागल। बामा बगलमे आयल किछु कारणी कँ झाड़लक तोरियाही वला भगतिया। बेरा-बेरी सलहेस, मोतिराम, दीनाभद्री, जोरखर सिंह, किरात, करिकन्हा आदिक भाव खेलायल गेल। गहबरक सामने धोती कँ ओहार देल गेल। तरसँ भगत गुरकुनियों कटैत आयल आ भाव केलक-जै गंगा-जै बीस सत जवाब पड़े छह बाबा चुहरमल कँ। फेर ओकर गीत गाओल गेल, वंदन सुमिरन करैत गेल अंतमे हाथमे आहुत ल' क' एलाह किरात महाराज। बामा हाथमे एहिना हाथमे धूमनक भार। लोक अपन-अपन धीया-पूतापर गमछा तालिया ल' झोका लिअ' लागल। आ अपन-अपन धीया पूता, घरनी आदिक देहसँ संकटकैं भगाबक मनोकामना करैत रहल।

भगैत सभ घुमि-घुमि सभक-संकट-अनहोनीकँ भगबैत रहल। भगैत सभपूजा समाप्तिक घोषणाक केलक। लोक सभ अपन-अपन घर विदा भ' गेल।

'कनेक कालमे प्रसादी बाँटल जायत। अपन अपन बासन' नेने आयब "कहि मांझजन आधा घंटाक मध्यान्तर देलथि कारण एहि बीच पहिने भगैत सभ कँ जीमाओल जेतै। भगत कँ भोजन करेलाक बादे प्रसाद वितरण हेतै। ताबत अन्हार से भ' गेल। दू टा लाइट जराक' आबि गेल अछि जकरा टूलपर राखि देल अछि। भगतिया सभ कँ आ पाँच टा संत कँ एक्कहि संग भोजन करा देल गेल अछि।"[4]

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

एहिना मनतोड़िआ कथा संग्रहक पहिल कथा थिक 'मनतोड़िआ' एहि कथाक नायिका मन तोड़िया अंततः निम्नवर्गपर आधारित अछि, बाल-बच्चाक लेल समर्पित जीवन रखितो, पतिक मजदूरीपर जीवन कटितो, ई बुझितो जे कातहि हमही।

कतिया देल जाएब, बेटा-पुतोहसँ फज्याति सुनब, मुदा अपन कर्तव्य-पथसँ कनेको भटकब नहि, से अंत धरि, जखन हम अपन शरीरो काज नहि करनि, तैंपर बेटा-पुतोहू द्वारा अलच्छ, डाइना, पापी आदि सम्बोधनसँ बेधित होइत छलीह, किन्तु पतिक सेवा-सुसुर्सा ओकर जीवनक आश्रय छलैक, से एक दिन जखन बेस काल धरि भूखे-पेटे, पति मंगलाक अयबाक बाट तकैत छल, रिक्शाक घंटीक आवास सुनबाक लेल कान पथने छल कि घंटीक आवाज तँ सुनाइ देलकैक, मुदा आइ ओकर पति रिक्शा चलबैत नहि, रिक्शापर सूतल छलैक, से सदाक लेल, ई बुझैत देखि कथाकारेक शब्दमे- 'मनतोड़िया अवाक।' मुँहसँ आवाज बन्न। बरंडापरसँ ओडरा गेलीह। टोल-पड़ोसक लोक सभक भीड़ जमा भऽ गेलैक रामा भरि पाँच कऽ पंजिया मनतोड़ियाँकेँ बैसा, मुँहपर पानि छिटलक। मुदा आब ओ-कहाँ.....।"

'मनतोड़िया' कथाक ई नमूना देखल जा सकैत अछि-

मनतोड़ियाक दशा एकदम खराब भऽ गेल छैक। ठीकसँ नुओं-बस्तर पेन्हल ने होइक! नदी-पोखरि, बाहर-भीतर अपनासँ कयलो नहि होइ! मंगला स्वयं अपना हाथे नुआँ-बस्तर, बाहर-भीतर करबैत रहय। बाट चलैत लोक भगवानकेँ कोसै। एहन सहृदय लोककेँ एहन दशा भऽ गेलै। एक दिन टोलक दू-चारि स्त्रीगण मनतोड़िया लग ठाढ़ भेलीह तँ कनियाँ चट्ट दऽ बाजय लगलीह- 'अँय! एकरा बेजाय कहै छियै! ई तँ पापी अछि, डाइन सेहो! मोरे-मोर एकर मुँह देखिकऽ उठब तँ भरि दिन खेनाइक कोन पानियो नै भेटत।'

'एना किएक बजै छी पुतोहू भऽ कऽ? ... कहियो हाथो लगेलियै एकरा!' एकटा बूढी बजलीह।

'हाथ की लगायब! कहीं हमरो एकर असरि पड़ि जायत तँ अहीं काज देब। देखे नै छियै, अपन जाउतके ठाढ़े गिरि गेलै! ... कखन मरत नहि जानि!'

ताबेमे मंगला आबि गेल रहय। ई बात सुनि ओकरा खूब आत्म-ग्लानि भेलैक। मोने मोन एहि बात लेल मनतोड़ियाँकै दोष देमय लागल।

'इहह बात कहने रहियै! ... लौल छुटि गेलै! ... बिआह कऽ दियौ बेटाकै! देखौक ने सेवा-सुश्रूषा!... नीक सेवा-सुश्रूषा भऽ रहल छैक!' टोल-पड़ोसक लोक मंगलाक खूब प्रशंसा करैत छलैक, पनीक सेवाक लेल। कियो कहै- 'एहन दुःखक घड़ीमे पतियेटा सहारा होइत छैक! ... हे! मनतोरिया सेहो कम सेवा नहि करैत छली मंगलाक। आइ ओकरो धर्म बनैत छैक। माँग हुने छैक! ... जीवन भरि दुःख-सुखमे संग रहबाक शपथ खयने छैक। वेदीक सात फेरा लगौने छैक, से मंगला निभाहि रहल अछि।'

मंगला जखन रिक्शा चलाबऽ जाइ छैक तखन आ जखन अबैत छैक तखन सभ दैनिक क्रिया मनतोड़ियाँकेँ अपने हाथे करय! भनसा करय, खियाबय, नहाबय, ओछाओन-बिछाओन कऽ तेल-कुड़

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

करय! ...तकर ठीक विपरीत बेटा-पुतोहु घृणा करय। लोक सभ मनतोड़ियाँकेँ दुःख देखि बड़ दुखी रहैत छैक। अपना हाथक बात रहै तखन ने।

आइ फेर बेटा-पुतोहु झगड़ कयने रहे। मनतोड़िया घरक बरंडापर बैसिकऽ पेरा ताकि रहल अछि। भूखे दर्द भऽ रहल छैक। बारह बाजि गेलै। दू बाजि गेलै। चारि-बजे एकटा रिक्शा घरक दरबज्जापर लगलैक। मनतोड़ियाक मोन हर्षित भऽ गेलै। ओ सोचलक जे आब आबि गेलैक। आब बाहर-भीतर लऽ जायत! भनसा करत... खिआओत, मुदा रिक्शा चलेनिहार छल ओकर देओर रामा। रामा रिक्शा ठाढ़ कऽ सोझे भौजी मनतोड़ियाक गरदनि पकड़ि बोम फाड़िकऽ कानय लागल। ... मनतोड़िया रामाक गरदनि पकड़ि कानय लागली- 'की भेलै बौआ!?... किए कनै छी... की भेल बाबू? बाजू ने!'

'भैया नहि रहलाह! बाजारमे रिक्शा चलाबऽ काल भैयाके छातीमे दरद उठलै। जाबे रिक्शावाला सभ डाक्टर लग लऽ कऽ जाए ताबेमे रिक्शेपर प्राण छोड़ि देलकैक।'

मनतोड़िया अवाक। मुँहसँ आवाज बन्न। बरंडापरसँ ओंधरा गेली। टोल-पड़ोसक लोक सभक भीड़ जमा भऽ गेलैक। रामा भरि पाँजकऽ पंजिया मनतोड़ियाँकै बैसा, मुँहपर पानि छिटलक। मुदा आब ओ कहाँ...! सौंसे टोल उदासी पसरि गेलै। वातावरण शान्त भऽ गेलै। अज्जो माय लाठी खुटकबैत-खुटकबैत अयलीह आ माइनजनकेँ कहलीह- "हे बौआ! रंथी नम्बरसँ बनबिहऽ जाहिसँ मंगला आ मनतोड़िया दुनू गोटे एक्के संग जा सकय...!"[5]

एकटा कथा अछि 'रंग'। एहि कथा माध्यमे डॉ. राम परिवार समाजमे बढ़ि रहल संस्कारक विकृत रुपकेँ दर्शबैत छथि। लोकक स्वभाव बदलि रहल अछि। समाज ओ परिवारक प्रति निकृष्ट भऽ रहल अछि। मानवीय संवेदना अनीतिपूर्वक भऽ रहल अछि। एकटा विवाहित व्यक्ति अपन सारिक संग आ ससुरारिक संग कयल घृणात्मक कृत्य एहि कथाक जड़िमे अछि। एकर किछु अंश एहिसँ स्पष्ट भऽ सकैत अछि-

> 'मतलब कोना नहि अछि! अहाँ जेठ जमाय छियै। जमाय बेटा बाखिल होइत छैक, ताहुमे जेठ!'
>
> 'जमाय छियै एकर की अर्थ! बेटी हिनकर, जानथि ई! ...खोजथि ई?'
>
> 'सभ गोटे अहीक नाम लैत अछि जे अहीं रम्भाकै भगौने छी!'
>
> 'तँ जाकऽ देखियौ हमरा अंगनामे।'
>
> 'अंगनामे रहत तखने ने! अहाँ तँ आन ठाम रखने छी।'
>
> 'तँ खोजू ग जतय रखने छी!'

ई सभ सुनि जीबछ मूड़ी गाड़ने। कखनो गमछासँ पसीना पोछथि तँ कखनो आँखिक नोर-पोटा। महादेव बाबू सेहो मूड़ी गाड़ने। अन्हड़सँ पहिनेक शान्ति जकाँ शान्त वातावरण। जेना सामूहिक नरसंहार भेल हो आ पूरा वातावरण सुन्न-शान्त, डराओन-भयाओन।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

जीबछ ठठि रामसुरति केर पैर पकड़ि बाजय लगलाह- 'पाहुन, हमर इज्जति बचाठ, नहि तँ हम नहि जीयब! ... सम्पूर्ण समाज हमरा की कहत!'

'की कहत? ... नहि जीयब तँ हमर की बिगड़ि जायत!'

ई दृश्य देखि जीबछक बड़की बेटी आ रामसुरतिक कनियाँ बेहोश भऽ अपना दुरुखापर गिर पड़लीह। पड़ोसी जनी-जाति सभ पानि छिटि ओकरा होशमे आनल्नि, मुदा ओ बौक जकाँ एकटक ओहिठामसँ महादेव बाबूक दरबज्जाक दृश्यकेँ देखैत रहलीह।

बेनीपुरक माइनजन-देवान दिससँ दबाबो पड़ल, मुदा तकरो कोनो असरि नहि रामसुरतिपर। सुरति भीड़सँ एकाएक ठठि सड़कपर आबि, मोटर नो. साइकिल स्टार्ट कऽ चौक दिस चल गेल। घंटा भरि बेंघाठज होइत रहल। बिना भोजन-भात, चाह-पानक जीबछ सभ गोटैक लेल मार्शल स्टार्ट कऽ धुरि आयल रमपुरा।

मटकोर नहि भेल। खबरि बेला पहुँचलिक। बिआह टूटि गेल। बरियाती नहि साजल गेल।[6]

"मुँह पुरखीमे" जमींदार द्वारा दलित समुदायक परिवारपर अत्याचारक वर्णन आ सुन्नरक बुधियारीसँ जमींदारक सभ दाव-पेंच असफल होयबाक कथा, कथाकारक प्रवृत्ति अनुसंधानात्मक अछि। 'जय-पराजयमे' घमंडक पराभव देखाओल गेल अछि तऽ एहि संग्रहक दोसर रुपमे अछि वर्त्तमानमे शिक्षक ह्रासक संग आन कतोक भावसँ भरल बिन्दु सभ।

डॉ. रामक ठपरोक्त दुनु कथा संग्रह केर सभ कथा गाम-घरक कथा कहैत अछि। कतौ आधुनिकताक चमक-दमक नहि। आइ जतऽ कथा सबभे नित नव-नव प्रयोग भऽ रहल अछि ओतऽ डॉ. महेन्द्र नारायण रामक कथा सर्वथा भिन्न। मैथिलीक जे कथा-परम्परा रहल अछि ओकर निर्वहन करैत पात्रोचित आ स्थानीय भाषाक प्रयोग करैत अपन कथ्यकेँ स्पष्ट करबामे सफल भेलाह अछि।

संदर्भ–

1. गहबर: डॉ. महेन्द्र नारायण राम कल्याण पथ दानिनी, खुटौना, 2004, पृ. 22
2. वएह, पृ. 30
3. वएह, पृ. 63-64
4. वएह, पृ. 123
5. मनतोड़िया : डॉ. महेन्द्र नारायण राम, नवारंभ, मधुबनी, वर्ष- 2019, पृ. 12
6. वएह, पृ. 27

© Copyright @ Authors